Important Questions Class 9 Hindi Chapter 14 चंद्र गहना से लौटती बेर

प्रश्न 1. कवि कहाँ से लौटा है? वह खेत की मेड़ पर क्यों बैठ गया?

उत्तर- कवि चंद्रगहना से लौटा है। वह खेत की मेड़ पर इसलिए बैठ गया ताकि वहाँ बैठकर आस-पास फैले प्राकृतिक सौंदर्य को जी भर निहार सके, प्रकृति का सान्निध्य पा सके और उसके सौंदर्य का आनंद उठा सके।

प्रश्न 2. कवि को ऐसा क्यों लगता है कि चना विवाह में जाने के लिए तैयार खड़ा है?

उत्तर- चने का पौधा हरे रंग का ठिगना-सा है। उसकी ऊँचाई एक बीते के बराबर होगी। उस पर गुलाबी फूल आ गए हैं। इन फूलों को देखकर प्रतीत होता है कि उसने गुलाबी रंग की पगड़ी बाँध रखी है। उसकी ऐसी सज-धज देखकर कवि को लगता है कि वह विवाह में जाने के लिए तैयार खड़ा है।

प्रश्न 3. 'चंद्र गहना से लौटती बेर' कविता में किसने किस उद्देश्य से हाथ पीले कर लिए हैं?

उत्तर- चंद्र गहना से लौटती बेर' कविता में सरसों सबसे सयानी हो चुकी है। सयानी होने से वह विवाह की वय प्राप्त कर चुकी है। उसने विवाह करने के लिए अपने हाथों में हल्दी लगाकर हाथ पीले कर लिए हैं।

प्रश्न 4. पत्थर कहाँ पड़े हुए हैं? वे क्या कर रहे हैं? 'चंद्र गहना से लौटती बेर' कविता के आधार पर लिखिए?

उत्तर- पत्थर तालाब के किनारे पड़े हैं जिन्हें पानी स्पर्श कर रहा है। ऐसा लगता है कि पत्थर अपनी प्यास बुझाने के लिए पानी पी रहे हैं। वे पता नहीं कब से पानी पी रहे हैं फिर भी उनकी प्यास नहीं बुझ रही है।

प्रश्न 5. 'चंद्र गहना से लौटती बेर' कविता में किस चिड़िया का वर्णन है? यह चिड़िया किसका प्रतीक हो सकती है?

उत्तर- 'चंद्र गहना से लौटी बेर' कविता में काले माथ वाली उस चिड़िया का वर्णन है जिसकी चोंच पीली और पंख सफ़ेद है। वह जल की सतह से काफ़ी ऊँचाई पर उड़ती है और मछली देखते ही झपट्टा मारती है। उसे चोंच में दबाकर आकाश में उड़ जाती है। यह चिड़िया किसी शोषण करने वाले व्यक्ति का प्रतीक है।

प्रश्न 6. 'चंद्र गहना से लौटती बेर' कविता में वर्णित अलसी को किस रूप में प्रस्तुत किया गया है और क्यों?

उत्तर- 'चंद्र गहना से लौटती बेर' कविता में वर्णित अलसी को प्रेमातुर नायिकी के रूप में प्रस्तुत किया गया है। इसका कारण यह है कि अलसी जिद पूर्वक चने के पास उग आई है। उसकी कमर लचीली औश्र देह पतली है। वह अपने शीश पर नीले फूल रखकर कहती है कि जो उसे छुएगा, उसको वह अपने हृदय का दान दे देगी।

प्रश्न 7. चंद्र गहना से लौटती बेर' कविता के आधार पर रीवा के पेड़ों का वर्णन कीजिए।

https://www.evidyarthi.in/

उत्तर- 'चंद्र गहना से लौटती बेर' कविता में वर्णित रीवा के पेड़ चित्रकूट की पहाड़ियों पर स्थित हैं। ये पेड़ काँटेदार तथा कुरूप हैं। इनकी पत्तियाँ छोटी-छोटी तथा भूरी हैं। इनके नीचे बैठकर छाया का आनंद भी नहीं लिया जा सकता है।

प्रश्न 8. 'मन होता है उड़ जाऊँ मैं'-कौन, कहाँ उड़ जाना चाहता है और क्यों?

उत्तर- 'मन होता है उड जाऊँ मैं' में कवि हरे धान के खेतों में उड जाना चाहता है जहाँ सारस की जोड़ी रहती है। यह जोडी एक दूसरे से अपनी प्रेम कहानी कहती है। कवि इस सच्ची प्रेम कहानी को चुपचाप सुनना चाहता है, इसलिए उसका मन उड़ जाने के लिए उत्सुक है।

प्रश्न 9. 'चंद्रगहना से लौटती बेर' कविता के आधार पर बताइए कि भूरी घास कहाँ उगी है? वह क्या कर रही है?

उत्तर- 'चंद्र गहना से लौटती बेर' कविता में भूरी घास तालब की तली में उगी है। हवा चलने से पानी में हलचल हो रही है। और पानी लहरा रहा है। इसका असर भूरी घास पर पड़ रहा है। इससे भूरी घास भी लहरा रही है।

प्रश्न 10. 'मैं यहाँ स्वच्छंद हूँ'-कवि ने ऐसा क्यों कहा है? 'चंद्र गहना से लौटती बेर' पाठ के आधार पर लिखिए।

उत्तर- 'मैं यहाँ स्वच्छंद हूँ'-कवि ने ऐसा इसलिए कहा है क्योंकि इस समय उसके पास कोई आवश्यक काम नहीं है। इसके अलावा उसे आवश्यक कार्यवश कहीं आना-जाना भी नहीं है। वह प्राकृतिक सौंदर्य को देखने और उनका आनंद उठाने के लिए स्वतंत्र है।

प्रश्न 11. 'चंद्रगहना से लौटती बेर' कविता में सारस का स्वर कवि को कैसा प्रतीत होता है? इसे सुनकर उसके मन में क्या इच्छा होती है?

उत्तर- 'चंद्रगहना से लौटती बेर' कविता में कवि को सारस का स्वर उठता-गिरता अर्थात् कभी धीमा तथा कभी तेज़ सुनाई देता है। उसके कानों को यह स्वर अच्छा लगता है। इससे उसके मन में यह इच्छा होती है कि वह भी सारस के साथ पंख फैलाकर कहीं दूर उड़ जाए। जहाँ सारस की जुगुल जोड़ी रहती है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. 'चंद्रगहना से लौटती बेर' कविता के उस दृश्य का वर्णन कीजिए जिसे कवि देख रहा है?

उत्तर- 'चंद्रगहना से लौटती बेर' कविता में कवि खेत की मेड़ पर बैठा है। उसके पास ही चना, अलसी और सरसों उगी है। चना, अलसी और सरसों पर फूला आ गए हैं। वातावरण शांत तथा मनोहर है। उसके पैरों के पास ही तालाब है जिसमें सूरज का प्रतिबिंब उसकी आँखों को चौंधिया रहा है। तालाब में अपनी टाँग डुबोए बगुला ध्यान मग्न खड़ा है। वह मछलियाँ देखते ही ध्यान त्याग देता है। तालाब के पास ही काले माथे वाली चिड़िया उड़ रही है जो मौका देखकर मछलियों का शिकार कर लेती है। कुछ ही दूर पर दूर-दूर तक फैली चित्रकूट की पहाड़ियाँ हैं जिन पर रीवा के काँटेदार पेड़ उगे हैं।

प्रश्न 2. 'चंद्रगहना से लौटती बेर' कविता ने साधारण-सी वस्तुओं में भी अपनी कल्पना से अद्‌भुत सौंदर्य का दर्शन किया है। स्पष्ट कीजिए।

https://www.evidyarthi.in/

उत्तर- चंद्र गहना से लौटती बेर' कविता के कवि की दृष्टि अत्यंत पारखी, सूक्ष्म अन्वेषण करने वाली है जिसमें कल्पनाशीलता समाई है। इसी कल्पना शीलता के कारण वह चने के पौधे को सजे-धजे दूल्हे के रूप में, अलसी को हेठीली, प्रेमातुर नायिका के रूप में तथा फूली सरसों को देखकर स्वयंवर स्थल पर पधारी विवाह योग्य कन्या का रूप सौंदर्य देखती है। जिसके हाथों में मेहंदी लगी है। वह प्रकृति को स्वयंवर-स्थल के रूप में देखता है। कवि को तालाब में सूर्य के प्रतिबिंब में चाँदी का बड़ा-सा गोल खंभा नजर आता है तो किनारे पड़े पत्थरों को पानी पीते हुए देखता है। इस तरह कवि साधारणसी वस्तुओं में अद्‌भुत सौंदर्य के दर्शन करता है।

https://www.evidyarthi.in/